कविवर पंडित संतलालजी कृत

षष्ठ पूजा

256
गुण सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अति नम्रता तिहुँ योग में निज भक्ति निर्मल भावहीं।
यह गुप्त जल प्रत्यक्ष निर्मल सलिल तीरथ लावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
जन्मजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अति वास विषय न वासनायुत मलय शील सुभावहीं।
अरु चंदनादि सुगन्ध द्रव्य मनोज्ञ प्रासुक लावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं श्री षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गीता

परिणाम धवल सुवर्ण अक्षत मलिन मन न लगावहीं।
तिस सार अक्षय अखय स्वच्छ सुवास पुंज बनावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मन पाग भक्त्यनुराग आनंद तान माल पुरावहीं।
तिस भाग कुसुम सुहाग अर सुर नागबास सु लावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनभक्तिरस में तृप्तता मन आन स्वाद न चावहीं।
अंतर चरू बाहिज मनोहर रसिक नेवज लावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरधान दीप प्रदीप्त अंतर मोह-तिमिर नशावहीं।
मणिदीप जगमग ज्योति तेज सुभास भेंट धरावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द धर्म-प्रभावना मन घटा धूम्र छावहीं।
गंधित दरव शुभ घ्राण प्रिय अति अग्नि संग जरावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चिंतवन फल विविध रसयुत भक्ति तरु उपजावहीं।
रसना लुभावन कल्पतरु के सुर असुर मन भावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित विमल वसु अंग युत करि अर्घ अंतर भावहीं।
वसु दरब अर्घ बनाय उत्तम देहु हर्ष उपावहीं।।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्धशत षट् अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं।।

ॐ ह्रीं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षड्पंचाशदधिकद्विशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

दोहा

थावर शब्द विषय धरै, त्रस थावर पर्याय।
यों न होय तो तुम सुगुण, हम किहविधि वर्णाय।।
तिसपर जो कछु कहत हैं, केवल भक्ति प्रमान।
बालक जल शशि-बिंब को, चहत ग्रहण निज पान।।

पद्धरी

जय पर-निमित्त व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्ध-स्वरूप भाग।
जग पालन बिन हो जगत देव, जय दयाभाव बिन शांतिभेव।।

पर सुख-दुखकरण कुरीति टार, पर सुख-दुख-कारण शक्ति धार।
पुनि पुनि नव नव नित जन्मरीत, बिन सर्वलोक व्यापी पुनीत।।
जय लीला रास विलास नाश, स्वाभाविक निजपद रमण वास।
शयनासन आदि क्रिया-कलाप, तज सुखी सदा शिवरूप आप।।
बिन कामदाह नहिं नार भोग, निरद्वन्द निजानंद मगन योग।
वरमाल आदि शृंगार रूप, बिन शुद्ध निरंजन पद अनूप।।
जय धर्म भर्म वन हन कुठार, परकाश पुंज चिद्रूपसार।
उपकरण हरण दव सलिलधार, निज शक्ति प्रभाव उदय अपार।।

नभ सीम नहीं अरु होत होउ, नहीं काल अन्त, लहो अन्त सोउ।
पर तुम गुण रास अनंत भाग, अक्षय विधि राजत अवधि त्याग।।
आनन्द जलधि धारा-प्रवाह, विज्ञान-सुरी मुख-द्रह अथाह।
निज शांति सुधा-रस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान।।
निज आत्मलीन विकलप विनाश, शुद्धोपयोग परिणति प्रकाश।
दृग ज्ञान असाधारण स्वभाव, स्पर्श आदि परगुण अभाव।।
निज गुणपर्यय समुदाय स्वामि, पायो अखण्ड पद परम धाम।
अव्यय अबाध पद स्वयं सिद्ध, उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध।।

एकाग्ररूप चिन्ता निरोध, जे ध्यावैं पावैं स्वयं बोध।
गुणमात्र 'संत' अनुराग रूप, यह भाव देहु तुम पद अनूप।।

दोहा

सिद्ध सुगुण सुमरण महा, मंत्रराज है सार।
सर्व सिद्धि दातार है, सर्व विघन हर्तार।।

ॐ ह्रीं अर्हं षड्पंचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक चूड़ामणी, सदा रहो जयवंत।
विघन हरण मंगल करण, तुम्हें नमैं नित 'संत'।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।